

Fear

भय

Question: What is sorrow?

प्रश्न : दुख क्या है?

Krishnamurti: A boy of ten asks what is sorrow! Do you know anything of sorrow? Do not bother who is asking. But a little boy asking what is sorrow is a sad thing, is it not, it is a very terrible thing. Why should he know sorrow? It is the old people, unfortunately, who know sorrow. But do you know what sorrow means? When you see a beggar and a rich man going by, when you see death, a body being burned, when you see a dead bird, when you see somebody crying, when you see degradation, poverty, people quarrelling, hitting each other verbally and physically, all that is sorrow, is it not? When your father or mother dies, you are left alone, and you have sorrow. But here we grow with death. You understand what I am saying, that we grow with death? We are never happy human beings. You see a dead body being carried to the river, and if you are with your parents, they say, 'Do not look, death is terrible.' So it begins. When you see a beggar—even as a little boy you cannot help seeing a beggar—with torn clothes, disease, wounds on his body, you feel so sorry for that man, but your parents or the older people take you away without explaining. It is a calamity, a social misery that there are such people. The parents are responsible because they do not explain all these

कृष्णमूर्ति : दस वर्ष का एक बालक पूछता है कि दुख क्या है! क्या आपको दुख के बारे में कुछ पता है? इसका महत्त्व नहीं है कि प्रश्न किसके द्वारा पूछा जा रहा है। परंतु एक छोटे से बच्चे द्वारा यह प्रश्न किया जाना कि दुख क्या है खेद की बात है, है कि नहीं?—यह अत्यंत भयानक बात है। वह दुख क्यों जाने? बूढ़े ही दुर्भाग्यवश दुख को जानते हैं। परंतु क्या आपको पता है कि दुख का अर्थ क्या होता है? जब आपकी नज़र किसी भिखारी पर पड़ती है और किसी धनी को पास से गुज़रते हुए देखते हैं, जब आप मौत को देखते हैं, जलती हुई चिता को देखते हैं, जब आप किसी मृत पक्षी को देखते हैं, जब आप अपमान, दरिद्रता को, लोगों को रोते हुए, परस्पर लड़ते-झगड़ते, गाली-गलौज करते हुए, मारपीट करते हुए देखते हैं तो दुख होता है। क्या यह सब दुख नहीं है? जब आपके माता या पिता की मृत्यु हो जाती है तब आप अकेले हो जाते हैं और दुखी हो जाते हैं। परंतु यहां पर हम मृत्यु के साथ-साथ विकसित होते हैं। मृत्यु के साथ-साथ बड़े होने की मेरी बात आप समझ रहे हैं? हम अच्छे सुखी, खुशदिल लोग नहीं हैं। नदी की ओर ले जाए जाते किसी शव को को आप देखते हैं और यदि आपके अभिभावक आपके साथ हैं तो वे कहते हैं, “उस ओर मत देखो, मृत्यु भयानक है।” इस प्रकार से दुख के एहसास की शुरुआत हो जाती है। जब आप भिखारी को देखते हैं--छोटा बच्चा भी भिखारी की ओर देखे बिना नहीं रह सकता--उसके चिथड़े कपड़े, उसकी बीमारी, उसके शरीर पर घाव देख कर आप उसके लिए बहुत दुखी हो जाते हैं जबकि आपके माता-पिता या आपसे बड़े लोग बिना कुछ समझाए आपको वहां से हटा देते हैं। समाज में ऐसे लोग होना अनर्थकारी है, दुखद है।

things; they want to protect you; they hide you from all that. They do not want to make you a revolutionary—which does not mean becoming a silly communist; a revolutionary is someone very, very different. They do not explain to you all these things. They are frightened, and they want to protect you.

Sorrow is something that has to be understood, tears have to be understood. There is no need for understanding when you are happy. When you smile, that does not need an explanation! But you see we are brought up, here as well as outside, unfortunately, without knowing how to think, how to observe, how to watch, and so we increase sorrow and multiply our trouble. But if, in our education, our teachers can point out these things, discuss, talk them over, then we may not be just the ordinary, everyday, stupid fathers or mothers or politicians or clerks but real human beings who are truly revolutionary and out to create a new world. Then perhaps we can understand, change, and put away sorrow.

Question: What is the definition of the good world?

Krishnamurti: You know, as I said yesterday, this meeting is primarily meant for students who want to find out, who want to discuss. The older people, if they are interested to help the students, would do well not to ask questions about their own

अभिभावक ही इसके लिए उत्तरदायी हैं क्योंकि वे इन सब चीजों को स्पष्ट नहीं करते, वे आपकी सुरक्षा करना चाहते हैं और उस सबको आपसे छुपाते हैं। वे नहीं चाहते कि आप क्रांतिकारी बनें—इसका यह अर्थ बिलकुल नहीं है कि आप एक झक्की साम्यवादी बन जाएं—क्रांतिकारी होना इससे बिलकुल भिन्न बात है। वे आपसे यह सब स्पष्ट नहीं करते। वे भयभीत हैं और चाहते हैं कि आप सुरक्षित रहें।

दुख एक ऐसी चीज़ है जिसे समझा जाना चाहिए, आंसुओं को समझा जाना चाहिए। जब आप सुखी होते हैं तो उसे समझना जरा भी ज़रूरी नहीं होता। जब आप मुस्कराते हैं तो उसके लिए व्याख्या की ज़रूरत नहीं होती! पर आप देखते हैं कि दुर्भाग्य से यहां पर और अन्यत्र भी, हमारी शिक्षा-दीक्षा ऐसी होती है जिसमें हम यह नहीं जान पाते कि चिंतन कैसे किया जाता है, अवलोकन कैसे किया जाता है और इस प्रकार से हम दुख को बढ़ाते और मुसीबतों को अनेक गुना अधिक कर बैठते हैं। किंतु यदि हमारी शिक्षा के दौरान हमारे शिक्षक इन बातों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित कर सकें, उन पर खुलकर चर्चा कर सकें तो हम औसत स्तर के साधारण से मूढ़ माता या पिता, या राजनीतिज्ञ अथवा क्लर्क नहीं बल्कि ऐसे सच्चे मानव हो सकते हैं जो सच में क्रांतिकारी हों और एक नये विश्व का निर्माण कर सकें। शायद तब हम समझ सकें, बदल सकें और दुख को मिटा सकें।

प्रश्न : सुंदर विश्व की क्या परिभाषा है?

कृष्णमूर्ति : आपको पता है जैसा कि मैंने कल कहा था, यह सभा मुख्य रूप से उन छात्रों के लिए है जो जिज्ञासु हैं, जो पता लगाना चाहते हैं, विचार-विमर्श करना चाहते हैं। यदि बड़े लोग समस्या को समझने में छात्रों की मदद करने के इच्छुक हैं, तो बेहतर यह होगा कि वे अपनी

personal problems. Probably children are not interested in the definition of the 'good world.'

निजी समस्याओं के बारे में प्रश्न न करें। संभवतः बच्चों की इस बारे में कोई रुचि नहीं है कि सुंदर विश्व की क्या परिभाषा है।

Now, why does the mind ask such a question? 'What is the definition of a good world?' The statement is clear; you can look it up in a dictionary and there you will find a definition. We think that by finding a definition we have understood the problem. That is how we are trained; we think we understand when we have a definition. But definition is not understanding; on the contrary, it is the most destructive way of thinking. Why do you want to know the definition of the good world? Because you cannot think out the problem, you go to somebody—to Shankara, to Buddha, to me, or to someone else and say, 'Please tell me the meaning of the good world.' If you can think it out, go into it, understand it, then perhaps you will have real enlightenment.

अच्छा, मन इस तरह के प्रश्न क्यों पूछता है? 'सुंदर विश्व की क्या परिभाषा है?' बात साफ है कि आप इसे शब्दकोश में देख सकते हैं और वहां आपको इसकी परिभाषा मिल जाएगी। हम सोचते हैं कि परिभाषा को समझ लेने पर हम इस समस्या को समझ लेंगे। इसी तरह से हमें प्रशिक्षित किया जाता है, हम सोचते हैं कि जब हमारे पास परिभाषा होती है तो हम चीजों को समझ जाते हैं। परंतु परिभाषा समझ नहीं होती, बल्कि इसके विपरीत यह तो सोचने का सर्वाधिक विनाशकारी तरीका है। आप सुंदर विश्व की परिभाषा क्यों जानना चाहते हैं? क्योंकि आप समस्या पर चिंतन नहीं कर पा रहे हैं, अतः आप किसी के पास जाते हैं--शंकर के, बुद्ध के, या मेरे या किसी और के पास, और कहते हैं, "कृपया मुझे सुंदर विश्व का मतलब बताएं"। यदि आप इस पर चिंतन कर सकें, मनन कर सकें, इसकी गहराई में जा सकें, इसे समझ सकें, तो संभवतः आप इसके यथार्थ बोध को पा सकेंगे।

What do we mean by 'good world'? It is really very important to go into this. The word has a meaning, has it not, it has a reference. A word like God or love or sacrifice or a word like India has great significance. Because you think you believe in God, the word God has a meaning to you; nervously you react to that word; psychologically you respond to it. If you do not believe in God that word is nonsense to you. If I have been trained in atheism or communism, in which I do not

'सुंदर विश्व' से हम क्या अर्थ लेते हैं? इसकी तह में जाना सचमुच बहुत महत्त्व रखता है। किसी शब्द का अपना एक अर्थ होता है, होता है न? इसका कोई संदर्भ होता है। 'ईश्वर' या 'प्रेम' अथवा 'भारत' जैसे शब्द बड़ा महत्त्व रखते हैं। चूंकि आपका विचार है कि आप 'ईश्वर' में विश्वास करते हैं इसलिए 'ईश्वर' शब्द आपके लिए अर्थपूर्ण होता है, उस शब्द पर आप भावुक हो कर प्रतिक्रिया करते हैं, आप उस पर मानसिक रूप से प्रत्युत्तर देते हैं। यदि आप ईश्वर पर विश्वास नहीं रखते तो वह शब्द आपके लिए बेमानी होता है। यदि मुझे नास्तिकता या साम्यवाद का प्रशिक्षण दिया गया है जिसके फलस्वरूप मैं ईश्वर में विश्वास नहीं करता, तो मैं कुछ भिन्न

believe in God, then I react differently. Similarly, to you, 'good world' might mean something, but to me it might have no meaning.

What do you mean by 'good world'? There is no good world. The fact is the world is rotten because there are wars, there are divisions of people—the higher and the lower, the authority, the prime minister and the poor cook, the big politician and the starving man, the king who has got everything and the other fellow who has nothing. It is a rotten world. We are caught by the words good and world. We have to understand what that word good implies, and we have to create a world which is good.

It is no good being carried away by words. We are always taught from childhood what to think, but never how to think. There is a science called semantics; in Greek, it means the meaning of words. There is a whole science of words being developed now. Words affect us mentally as well as physically, and it is very important to understand them and not be affected by them. The moment the word communism is used, a capitalist goes into a shiver about it. Similarly, a man who has property is scared of the word revolution; if you talk about revolution, he will throw you out. If you say to those who follow a guru, 'Don't follow another, it is silly to follow,' they also get scared and want to throw you out. This constant fear of words is due to lack of understanding. After all,

प्रकार की प्रतिक्रिया करता। इसी प्रकार 'सुंदर विश्व' आपके लिए कुछ अर्थ रखता होगा, जबकि मेरे लिए हो सकता है यह एकदम बेमानी हो।

'सुंदर विश्व' से आपका क्या मतलब है? सुंदर विश्व जैसा कुछ नहीं होता। तथ्य तो यह है कि यह दुनिया एक सड़ी-गली दुनिया है, क्योंकि यहां युद्ध है, लोगों में विभाजन है--ऊंचे और नीचे लोग, प्रभुत्व वाले लोग, प्रधानमंत्री और गरीब रसोइया, बड़ा राजनीतिज्ञ और भूख से मरता आदमी, राजे-महाराजे जिनके पास सब कुछ है और दूसरे लोग जिनके पास कुछ भी नहीं है। यह एक भ्रष्ट, विकृत संसार है। हम 'सुंदर' और 'विश्व' जैसे शब्दों में उलझे हुए हैं। 'सुंदर' शब्द का क्या निहित आशय है इसे हमें समझना होगा और हमें एक ऐसे विश्व का निर्माण करना होगा जो सुंदर हो।

शब्दों के प्रवाह में बह जाना ठीक नहीं है। हमें बचपन से सदा यही सिखाया जाता है कि हम क्या सोचें, हमें यह कभी नहीं सिखाया जाता कि हम कैसे सोचें। 'सिमैंटिक्स' नामक एक विज्ञान होता है, ग्रीक भाषा में इस शब्द का अर्थ है शब्दों के तात्पर्य का अध्ययन। अब जो नये शब्द अस्तित्व में आ रहे हैं उनके विकास के मूल में एक संपूर्ण विज्ञान है। चूंकि शब्द हमें मानसिक और साथ ही भौतिक रूप से भी प्रभावित करते हैं अतः यह महत्त्वपूर्ण है कि हम उन्हें समझें और उनसे अप्रभावित रहें। जिस क्षण 'साम्यवाद' शब्द का प्रयोग किया जाता है पूंजीवाद के पक्षधर को कंपकंपी छूटने लगती है। इसी तरह, धन-संपत्ति रखने वाले व्यक्ति को 'क्रांति' शब्द से डर लगता है। किसी गुरु के अनुयायी को यदि आप कहें, "दूसरे के अनुयायी मत बनो, अनुयायी होना नासमझी है" तो वह सिहर उठेगा और आपको वहां से भगा देगा। शब्दों से होने वाला यह सतत भय समझ के अभाव के कारण होता है। आखिरकार, शिक्षा शब्दों की और शब्दों के माध्यम से किए जाने वाले अर्थ के संप्रेषण

education is the understanding of words and the understanding of communication through words.

There is no such thing as a 'good world.' We must take things as they are and not idealize; we must not have ideals as to what the world should be. All ideals—the ideal school, the ideal country, the ideal headmaster, the ideal of nonviolence—are nonsense, they are ridiculous, they are all illusions. What is real is actually what is. If I can understand the actual thing as it is—the poverty, the degradation, the squalor, the ambition, the greediness, the corruption, fears—then I can deal with it, I can break it down. But if I say, 'I should be this or that,' then I wander off into illusion. This country has been fed for centuries on ideals which are all illusion. You have been fed on nonviolence when you are really violent. Why not understand violence, and not talk of nonviolence? If you have understanding of what is, there would be a real revolution.

की समझ ही तो होती है।

‘सुंदर विश्व’ जैसी कोई चीज़ नहीं होती। चीज़ें जैसी होती हैं हमें चाहिए कि हम उन्हें उसी रूप में स्वीकार करें, न कि किसी आदर्श रूप में, विश्व कैसा होना चाहिए इस विषय में हमें कोई आदर्श नहीं रखने चाहिए। सभी आदर्श—आदर्श विद्यालय, आदर्श राष्ट्र, आदर्श प्रधानाध्यापक, अहिंसा का आदर्श—बेतुके और हास्यास्पद होते हैं, वे सभी भ्रामक होते हैं। तथ्यतः वास्तविक वही है ‘जो है’। यदि सही मायने में विभिन्न चीज़ों को—दरिद्रता, विभाजन, कटुता, आकांक्षा, लालच, भ्रष्टाचार, भयों आदि को जैसी वे हैं—इन सबको मैं यथावत समझ सकूँ तो मैं इन सबसे निबट सकता हूँ, मैं इन्हें मिटा सकता हूँ। किंतु यदि मैं कहता हूँ ‘मुझे यह अथवा वह होना चाहिए’ तो मैं भ्रांतियों में भटकने लगता हूँ। इस देश को सदियों से निरंतर जिन आदर्शों की घुट्टी पिलाई जाती रही है वे सभी भ्रम हैं। आपको अहिंसा का पाठ पढ़ा-पढ़ाकर बड़ा किया जाता है जबकि आप हिंसक हैं। अतः क्या यह उचित नहीं होगा कि अहिंसा की बातें करने की बजाय हिंसा को समझा जाए? यदि आप ‘जो है’ की समझ रखते हैं तो वास्तविक क्रांति होगी।